माता लीलावती जी का अभिनन्दन समारोह

स्वामी इन्द्रवेश जी का समूचा जीवन संघर्ष में व्यतीत हुआ। एक समय ऐसी विकट स्थिति भी आई कि दिल्ली में उनको पैर रखने की जगह भी किसी आर्य समाज ने नहीं दी। कारण स्पष्ट था कि दिल्ली स्थित सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, प्रादेशिक सभा, आर्य केन्द्रीय सभा यह पूरा एक गठजोड बना हुआ था अतः कोई भी समाज उसका कोपभाजन बनने को तैयार नहीं था। ऐसी दयनीय स्थिति में यदि किसी आर्य समाज ने वेशद्वय को न केवल सहयोग दिया, आवास और भोजन की निःशुल्क व्यवस्था प्रदान की बल्कि पूरा सम्मान भी दिया तो वह था शक्तिनगर का आर्य समाज जिसकी स्थापना और निर्माण में भाई जी अर्थात् ओमप्रकाश गुप्त और उनकी सहधर्मिणी माता लीलावती जी का प्रमुख योगदान रहा था। स्वामी इन्द्रवेश जी इस आर्य दम्पत्ति की सहृदयता के हमेशा कायल रहे। आर्य समाज शक्तिनगर में आज भी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के पास दो कमरों का सैट है। ओमप्रकाश गुप्त भाई जी का सार्वजनिक अभिनन्दन उनकी मृत्यु (23 अप्रैल 1997) के उपरान्त एक स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित करके सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद ने उनके प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये थे। इस अवसर पर दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा को बतौर मुख्य अतिथि आमंत्रित किया गया था।

जनवरी 2001 से ही माता लीलावती जी का भी सार्वजनिक अभिनन्दन करने की बात शुरू हो चुकी थी। उन दिनों त्यागमूर्ति डॉ. सन्तोष 'कण्व' राजधर्म के प्रबन्ध सम्पादक थे और आर्य समाज शक्तिनगर में ही ठहरते थे। वे जब माता लीलावती जी के सम्पर्क में आये तो उनकी ममता, स्नेह और वात्सल्य ने उन्हें अभिभूत कर दिया। माता जी के आर्य समाज में दिये गये महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा जब उन्होंने श्री जगवीर सिंह एडवोकेट के श्रीमुख से सुनी तो माता जी के प्रति उनकी श्रद्धा और बढ़ गई। कण्व जी के मन में यह विचार उठा कि आर्य समाज में कई पुरुषों के तो अभिनन्दन हो चुके हैं अतः क्यों न माता जी का अभिनन्दन उनके जीते जी एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करके किया जाये। अपने मन की यह बात जब उन्होंने श्री जगवीर जी के समक्ष रखी तो उन्होंने इसे आदर देते हुए स्वामी इन्द्रवेश जी तक बढ़ाया। स्वामी जी ने कहा कि यह काम तो तुरंत होना चाहिए। इसकी सूचना जब किसी स्रोत से माता लीलावती जी को पहुँची तो वे बिगड उठीं और जगवीर जी से बोलीं मैंने ऐसा क्या किया है जो मेरा अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो। मैं नहीं चाहती कि किसी को यह कहने का अवसर दूँ कि मैं लोकैषणा की भूखी हूँ। एक तरह से यह प्रस्ताव रद्द-सा हो गया था। लेकिन जगवीर जी ने डॉ. कण्व को सामग्री जुटाने का आग्रह करते हुए कहा कि समय आने पर माता जी को मना लिया जायेगा। अतः कण्व जी ने महत्वपूर्ण पत्रों, लेखों, व्याख्यानों, अभिनन्दन पत्र व उनकी पिछले साठ सालों में की गई समाज-सेवा का विवरण इकट्ठा करना शुरू कर दिया। युवा पत्रकार कौशलेन्द्र प्रपन्न भी इस कार्य में सहयोग देने को आगे बढ़े। उन्होंने 'अमर उजाला' के साप्ताहिक परिशिष्ट में माता जी से सम्बंधित एक आलेख भी इस दौरान प्रकाशित कराया। किन्तु इस योजना को एक जबरदस्त झटका तब लगा जब मई 2002 में डॉ. सन्तोष कण्व का असामयिक निधन बरेली के आर्य समाज में हो गया जहां वे स्थायी रूप से रहते थे। वे कैंसर से पीड़ित थे लेकिन अपने स्वभावानुसार इसका न तो किसी से जिक्र किया और न उपचार कराया।

नवम्बर 2004 के पहले सप्ताह की बात है स्वामी इन्द्रवेश जी दिल्ली आये हुए थे कि माता लीलावती जी का स्वास्थ्य और कुशलक्षेम पूछने जगवीर जी के साथ उनके निवास पर गये। उनसे बात करते-करते स्वामी जी को माता जी के अभिनन्दन की बात याद आई और जगवीर जी से पूछ बैठे कि इस योजना का क्या हुआ। जब उन्हें कण्व जी के निधन से उत्पन्न व्यवधान की बात बताई गई तो बोले नहीं ऐसा कैसे चलेगा। यह कार्य तो तत्काल होना चाहिए। आर्य समाजी मृतकों का नहीं जीवितों का श्राद्ध किया करते हैं। स्वामी जी ने ये निर्देश सहज भाव से दिये और कहा कि माता जी का अभिनन्दन तो एक अभिनन्दन ग्रन्थ के साथ होना चाहिए कोरे शाब्दिक और मंचीय अभिनन्दन से काम नहीं चलेगा। बिना किसी तैयारी के जगवीर जी ने कह दिया कि इसके लिए 19 दिसम्बर 2004 का दिन तय कर लेते हैं जो शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस भी है। स्वामी जी ने इस पर अपनी सहमति जतायी। जगवीर जी के पास अभिनन्दन ग्रन्थ की सामग्री जुटाने व उसे प्रकाशित करने का बहुत ही कम समय था। उन्होंने मुझे हरिद्वार फोन किया तो मैंने कहा इतने कम समय में यह सब कैसे सम्भव हो पायेगा? जो काम पिछले तीन साल में नहीं हो सका उसे एक महीने में कैसे कर पायेंगे? उन्होंने आश्वस्त किया कि कुछ सामग्री जुटा रखी है आप शीघ्र दिल्ली आ जायें, सब मिल कर इस कार्य को करेंगे तो हो ही जायेगा। पत्रकार कौशलेन्द्र प्रपन्न ने भी सक्रियता से योगदान देने का भरोसा दिलाया। दो-चार दिन का समय निकाल कर मैं नवम्बर में दिल्ली गया, जुटाई गई सामग्री को व्यवस्थित रूप दिया, माता जी के सम्बंध में अपना भी एक लेख तैयार करके दिया, ग्रन्थ में जाने वाले चित्रों का भी चयन किया। सामग्री तिलक प्रिंटिंग प्रेस, सीताराम बाजार को सौंप दी और राजेश जी से आग्रह किया कि इसे प्राथमिकता देकर टाईप करें। सभी के सहयोग से, इस तरह सवा तीन सौ पृष्ठों का यह अभिनन्दन ग्रन्थ ''मातृ देवोभव' शीर्षक से दिसम्बर 2004 में छप कर तैयार हो गया।

12 सितम्बर 2004 को स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में गुरुकुल गौतम नगर में जिस सार्वदेशिक सभा का गठन हुआ था, उसी की ओर से यह अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हुआ व भेंट किया गया। अभिनन्दन समारोह का आयोजन आर्य समाज शक्ति नगर के निकट ही 19 दिसम्बर 2004 को किया गया। आमंत्रित सभी संन्यासियों व विद्वानों ने ठीक समय पर पधार कर माता जी के प्रति अपनी सद्भावना का प्रमाण प्रस्तुत किया। देश भर से माता जी के शुभचिन्तक व हितैषी इस अवसर पर पधारे। अभिनन्दन समारोह समिति के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी के सान्निध्य में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक सभा का प्रधान चुने जाने पर स्वामी अग्निवेश जी का स्वागत भी आर्य समाज शक्ति नगर के प्रधान श्री नरेन्द्र गुप्ता व मन्त्राणी कौशल रानी बंसल ने शाल व मोतियों की माला भेंट करके इस अवसर पर किया। माता लीलावती अभिनन्दन ग्रन्थ 'मातृ देवोभव' का विमोचन स्वामी अग्निवेश जी ने अपने कर-कमलों से करते हुए माता जी को भेंट किया। गुरुकुल प्रभात आश्रम के आचार्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी ने आशीर्वचन दिया। लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, दिल्ली की पूर्व महापौर और आर्य महिला सभा दिल्ली की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या, स्वामी वरुणवेश (हस्तिनापुर), स्वामी दिव्यानन्द (योगधाम, ज्वालापुर), आचार्य वेदव्रत मीमांसक (वडलूर, आन्ध्र प्रदेश), डॉ. देवव्रत आचार्य, स्वामी विशुद्धानन्द, (बरगड़, उड़ीसा), स्वामी सत्यवेश (छींटावाला, पंजाब), ब्र. विनय नैष्ठिक (रोहतक), आचार्य यशोवर्धन (मेरठ), आचार्या कलावती (महेद्रगढ़), डॉ. प्राची आर्या (हरिद्वार), आचार्या विद्यावती (कन्या गुरुकुल, लोवा कलां, हरियाणा), आर्य महिला सभा दिल्ली की मन्त्राणी श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, आचार्य रामकिशोर (सोरों, उत्तर प्रदेश) आदि ने माता लीलावती जी के सम्बंध में अपने संस्मरण सुनाये व शुभकामनाएँ दीं। पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने शाल, श्रीफल एवं माल्यार्पण द्वारा माता जी के अभिनन्दन की प्रक्रिया पूरी की तथा उनके लिए शतायु की कामना की। धर्माचार्य श्री प्रेमपाल शास्त्री (प्रधान आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली) ने विशेष वेदमन्त्रों से माता जी के लिए मंगलाचरण किया।

सर्वश्री हीराप्रसाद शास्त्री, डॉ. श्रीवत्स शास्त्री, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण, प्रो. श्योताज सिंह, विरजानन्द (बहरोड, राजस्थान), ब्र. रामफल (महर्षि दयानन्द धाम, शुक्रताल), ओमप्रकाश आर्य एवं माता जगदीश आर्या (अमृतसर), ब्रह्मचारी नन्द किशोर (नेपाल), शिवराज शास्त्री, वेदकुमारी शास्त्री (राजेन्द्र नगर), डॉ. रामप्रकाश 'सरस' (रोहिणी), डॉ. राजेश आर्या (मुजफ्फर नगर), वेदप्रकाश आर्य चेयरमैन (फुगाना), कालूराम प्रधान (खरड़), मनोचा खण्डेलवाल (तिगरी शुक्रताल), मा. संतराम आर्य (रोहतक), अभयदेव आर्य, लाला फूलचन्द व कृष्ण चन्द (सफीदों), मधुर प्रकाश (दिल्ली) सहन्सरपाल व उनके साथी, आचार्य रामचन्द्र शर्मा, रामचन्द्र शास्त्री लेक्चरर, गणेशदास गोयल (नया बांस), कुलदीप सिंह, जितेन्द्र, दलवीर सिंह आदि विद्यार्थियों, भूदेव आर्य, रामभरोसे आर्य, वीरपाल आर्य, राधेश्याम आर्य, विमला गुलाटी, कान्ता बाली, विद्यावती अरोडा, ऊषा ऋषि, पुष्पावती, सन्तोष भल्ला आदि सैंकड़ों भाई-बहनों, बुजुर्गों व माताओं ने पुष्प मालाओं से माता लीलावती जी का अभिनन्दन किया और दीर्घायु की कामना की।

इस पूरे कार्यक्रम का मंच संचालन श्री जगवीर सिंह एडवोकेट ने कुशलता से किया, माता जी के ज्येष्ठ पुत्र डॉ. भूपेन्द्र सिंह जी ने, जो अमेरीका में रहते हैं, और पुत्रवधु वसुधा गुप्ता ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। भोजन की सुन्दर व्यवस्था श्री वीरेन्द्र गुप्त ने की। सभी श्रोताओं और वक्ताओं ने इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए इसे माता जी का जीवित श्राद्ध बताया। माता जी की बेटी स्नेहलता व प्रमिला पुत्रवधु सुलभा व अंजू तथा नरेद्र गुप्ता आदि ने व्यवस्था को अच्छी तरह से समझा।